प्रथम अध्याय

"श्रवणकुमार गोस्वामी का संक्षिप्त परिचय"

प्रथम अध्याय

"श्रवणकुमार गोस्वामी का संक्षिप्त परिचय"

पृष्ठभूमि -

कथा साहित्य के क्षेत्र में श्रवणकुमार गोस्वामी जी का नाम अपरिचित नहीं है। सामाजिक परिवेश को अपने उपन्यासों का विषय बनानेवाले नवम् दशक के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में श्रवणकुमार गोस्वामी जी का नाम लिया जाता है। वे बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होने उपन्यास के क्षेत्र में तो अपनी ऊँची उड़ान लाँघ ही दी है। उनका कहानी-सग्रंह, प्रहसन, एकांकी, नाटक, हास्य-व्यंग्य, जेल-संस्मरण, शोध, आलोचना, लेख और संपादित ग्रंथ आदि अनेक विधाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होने समाज में चल रहे पीढ़ी-दर-पीढ़ी की कुरीतियों का बारीकी से निरीक्षण करके वह अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। उनके व्यक्तित्व-कृतित्व के बारे में जानने से तो सिर्फ हमें साधारण-सा परिचय हो जाता है। लेकिन उनकी असली पहचान तो उनकी सृजनात्मकता से हमें उनकी लेखनी में दिखाई देता है। उनके व्यक्तित्व के बारे में कहा जाता है- "समकालीन उपन्यासकारों में डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी जी की प्रतिष्ठा लक्ष्यकेंद्रित रचनाधर्मिता भले ही मठाधीश और गुटबाज समीक्षकों द्वारा जान-बूझकर उपेक्षित की गई हो, किंतु एक विशाल निष्पक्ष और सुधी पाठक समूह ने उसे जो स्वीकृति और सम्मान दिया है, उससे उनके उपन्यासकार व्यक्तित्व की महत्ता स्वयं सिद्ध हो जाती है।"[1] इस बात से यह स्पष्ट होता है कि श्रवणकुमार गोस्वामी जी किसी प्रतिष्ठा या किसी सम्मान में या किसी समीक्षक की वाह ! वाह ! या सहानुभूति मिलने की उन्होने आशा नहीं की। वे अपनी लेखनी के प्रति ईमानदार रहकर समाज में चल रहे राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक और अराजकता की स्वार्थांधता का पर्दाफाश अपनी सहज, सीधी और प्रवाहमयी भाषा के माध्यम से पाठकों के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। यही उनकी निरंतर विकास का प्रमाण है। उनकी रचनाधर्मिता की निष्ठा इस बात से प्रमाणित होती है।

---

1. सं. शरेशचंद्र चुलकीमठ - उपन्यासकार श्रवणकुमार गोस्वामी, संपादकीय से उद्धृत

1.1 श्रवणकुमार गोस्वामी का व्यक्तित्व -

1.1.1 जन्म -

श्रवणकुमार गोस्वामी जी का जन्म गोपाष्टमी के दिन 22 नवंबर, 1936 में राँची (झारखंड) में हुआ था। उसके बारे में वे स्वयं कहते हैं कि केवल इतना सुना है कि मेरा जन्म गोपाष्टमी के दिन हुआ था। इसलिए हमारे पुरोहित ने मेरे पिताजी से कहा - "इस लड़के के नाम के पीछे 'गोस्वामी' उपाधि जोड़ दो।"[1] उन्होने पहले ही स्पष्ट कहा है कि 'गोस्वामी' उपाधि जातिसूचक नहीं है। इस प्रकार उनका नाम 'श्रवणकुमार गोस्वामी' हो गया। लेकिन यह नाम उनके लिए बड़ा दुःखदायी प्रमाणित हुआ। उसकी वजह स्वयं बताते हैं- " 'श्रवणकुमार' अकारण मारा गया था, लेकिन मैं बार-बार मारा गया, गोस्वामी (तुलसीदास) अपने रामचरितमानस के कारण बहुत अपमानित होना पड़ा था और मैं भी अपनी 'नागपुरी सेवा' के लिए बेहद अपमानित किया गया।"[2]

1.1.2 बचपन -

श्रवणकुमार गोस्वामी जी का बचपन अभावग्रस्त, पीड़ित, गरीबी, अशांति और घुटन से भरा हुआ दिखाई देता है। घर में हमेशा कलह होने के कारण उनका बचपन 'बचपन' में ही छीन लिया गया था। पड़ोसियों की निगाह में वे 'बिगड़ा हुआ लड़का' होने के कारण पड़ोसी अपने बच्चों को उनके साथ खेलने से मना करते थे। इसलिए यह कहना सही ठहरता है कि उनका बचपन उनसे 'बचपन' में ही छीन लिया गया था।

1.1.3 परिवार -

श्रवणकुमार गोस्वामी के परिवार में माता-पिता, भाई-बहन और भाभी एक साथ रहते थे। उनके माताजी का नाम 'तेतरी कुँवर' था। वह सहृदयी और संवेदनशील नारी थी। उनका देहांत 20 अप्रैल, 1964 को रामनवमी के दिन हुआ था। उनके पिताजी का नाम 'वैजनाथ खरादी' था। उन्हें अक्षरों की मामूली-सी पहचान होने के कारण कभी-कभी फुर्सत के क्षणों में 'आल्हा उदल' मात्रा मिला-मिलाकर पढ़ा करते थे। उनका देहांत 14 नवंबर, 1974 राँची में हुआ था।

---

1. सं. शरेशचंद्र चुलकीमठ - उपन्यासकार श्रवणकुमार गोस्वामी, पृ. 9
2. वही, पृ. 9

श्रवणकुमार गोस्वामी जी की सबसे बड़ी बहन का नाम 'बासो' था। उसका विवाह दिल्लू खरादी के साथ हुआ था। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा। उनका अकाली देहांत हो गया था। श्रवणकुमार गोस्वामी जी के बड़े भाई का नाम 'रामनाथ खरादी' था। उनका विवाह बनारस की 'मोहिनी देवी' के साथ हुआ था। उनका भी वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा। रामनाथ खरादी कुशल कारागीर थे। वे निष्प्राण लकड़ी को कलाकृति में बदलने में माहिर थे। उन्हें बिहार सरकार के वन विभाग से अनेक पुरस्कार मिले थे। श्रीमती रामदेई गोस्वामी की दूसरी बहन है, जो उनसे बड़ी थी। उनका विवाह रामदास खरादी के साथ बनारस में हुआ था। लेकिन उनका भी जीवन सुखद नहीं रहा। गोस्वामी जी का परिवार निर्धन तथा अशिक्षित था। पिताजी और भैया की इतनी आय तो हो ही जाया करती थी कि उनका परिवार मजे से अपना गुजर-बसर कर सकता था। मगर भैया को जुआ और शराब की लत थी। पिताजी को भी शराब और माँस मछली का बड़ा शौक था। दोनों की इन आदतों के कारण परिवार को अभावों की ओर ढकेल दिया था।

श्रवणकुमार गोस्वामी जी का विवाह 9 दिसंबर, 1966 में कानपुर के राजेश्वरीदेवी के साथ हुआ था। अब राजेश्वरी देवी 'राज गोस्वामी' के नाम से जानी जाती हैं। विवाह के पूर्व गोस्वामी जी बिल्कुल अकेले अपने को महसूस करते थे और भीतर-ही-भीतर घुटते रहते थे। दुःख के क्षणों में ऐसा कोई नहीं था जिससे वह अपनी व्यथा कहें। शादी से उन्हें एक ऐसी बीवी मिली है, जिसमें वे एक साथ पत्नी, प्रेमिका, सखी और माँ को भी पाते हैं। उनकी बीवी उच्च शिक्षित तो नहीं है फिर भी उन्होने गोस्वामी जी के जीवन को ऐसी व्यवस्था और माहौल प्रदान किया है, जिसमें वे निरंतर संघर्षरत रहकर भी अपना काम सुचारू रूप से करते हैं। इसलिए वह अपने आपको बड़भागी मानते हैं।

श्रवणकुमार गोस्वामी और राजगोस्वामी जी की तीन संतान हैं। दो पुत्री और एक पुत्र। सबसे बड़ी पुत्री का नाम है- 'सुजाता राज़ी'। जिसका विवाह 24 जनवरी, 1999 को मुजफ्फरपुर निवासी 'श्री राजेशकुमार सिंह' के साथ हुआ है। वह इलाहाबाद बैंक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता में राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। दूसरी पुत्री का नाम है- 'सुलेखा पूर्णिमा'। उसने बी. ए. (ऑनर्स) किया है। वह आई. सी. डब्लू. ए. के तीन भागों की परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुकी है। एक पुत्र है जिसका नाम 'भुवन भास्कर' है। वह इतिहास में एम्. ए. कर रहा है। इस तरह श्रवणकुमार गोस्वामी जी का परिवार है।

1.1.4 शिक्षा-दीक्षा -

श्रवणकुमार गोस्वामी की शिक्षा नगर पालिका के एक मामूली स्कूल में सीधे दूसरी कक्षा से सन् 1944 के जनवरी महीने से आरंभ हुई। उनके स्कूल का नाम 'चर्च रोड अपर प्राइमरी स्कूल' था। पाँचवी कक्षा तक उनकी पढ़ाई इसी स्कूल में हुई थी। छठी से ग्यारहवीं कक्षा तक 'मारवाडी हाईस्कूल, राँची' के छात्र रहे। सन् 1954 में मैट्रिकुलेशन पूरा किया। आई. ए. की परीक्षा सन् 1956 में राँची कॉलेज, राँची से हुई तथा बी. ए. की शिक्षा राँची कॉलेज, राँची से प्राप्त करके सन् 1961 में एम्. ए. एवं सन् 1970 में पीएच्. डी. की उपाधि रांची विश्वविद्यापय से ली।

1.1.5 नौकरी -

श्रवणकुमार गोस्वामी जी की नौकरी की शुरुआत 28 जुलाई, 1961 से 27 जुलाई, 1962 तक हैवी इंजीनिअरींग कार्पोरेशन लिमिटेड, राँची में लोअर डिवीजन क्लार्क के रूप में की। इस समय में दस दिन तक गुमला कॉलेज, गुमला में हिंदी व्याख्याता के रूप में कार्य करने का मौका मिला। 28 जुलाई, 1962 से 11 जुलाई, 1985 तक डोरंडा महाविद्यालय, राँची में व्याख्याता तथा प्रवाचक के रूप में वे हिंदी विभागाध्यक्ष रहे। 12 जुलाई, 1985 से राँची विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में स्थानांतरण हो गया। उन्होने लगभग चौदह वर्षों तक राँची विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग में आचार्य के पद पर बने रहे और इस प्रदीर्घ सेवा करने के बाद जनवरी, 1998 में राँची विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त हो चुके हैं। अब वे स्वतंत्र रूप से लेखन का कार्य करते हैं।

1.1.6 जेल जीवन -

सृजनात्मक लेखन के लिए अनुभव की प्रामाणिकता एक अनिवार्यता है। इसीलिए जेल जीवन पर किताब लिखने के उद्देश्य से लेखक हजारीबाग की जेल में बंदी के रूप में कैद हुए थे। उन्होने 'लौहकपाट के पीछे' जैसी विस्फोटक रचनाओं को लिखकर भी वे मुस्कुराते हुए जी रहे हैं। जबकि श्री विष्णु प्रभाकर जी जैसे दिग्गज साहित्यकार भी उनके संबंध में कहते हैं- "ताज्जुब है कि बाहर कैसे है।"[1] तब गोस्वामी जी कहते हैं- भीतर रहने का भय, जो होता है, उन्होने उसे

---

1. सं. शरेशचंद्र चुलकीमठ - उपन्यासकार श्रवणकुमार गोस्वामी, पृ. 19

मिटा भी दिया है क्योंकि सत्ताईस दिनों तक हजारीबाग के केंद्रीय कारागार में रहे। वे कहते हैं कि ''यहाँ मैं स्वयं गया था- अनुभव की पूँजी बटोरने। वहाँ से मैं खाली हाथ नहीं लौटा गठ्ठरभर कर सामान और उससे भी ज्यादा अनुभव की संपदा लेकर लौटा था वहाँ से।''[1] इस प्रकार उनकी रचनाधर्मिता के प्रति निष्ठा का यहाँ परिचय हमें मिलता है।

1.1.7 बहुआयामी व्यक्तित्व -

श्रवणकुमार गोस्वामी जी प्रतिभासंपन्न और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होने दुर्बलता का सहारा कभी नहीं लिया। वह सदैव अपने आपको संघर्षशील एवं कर्मशील रहने के लिए दृढ़ता के साथ तैयार थे। उन्होने कभी झूठ या झूठी प्रतिष्ठा की अपेक्षा नहीं की। वे सदैव ईमानदारी और प्रामाणिकता के प्रति समर्पण किया है। आदर्श शिक्षक के रूप में भी उन्होने अपना कर्तव्य निष्ठा से निभाया है। वह मानवीय आस्था के साथ संवेदनशील सहृदयी, भावुक और मानव समता के सुंदर भविष्य के स्वप्नद्रष्टा भी रहे हैं। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक उनके साहित्य में हमें दिखाई देती है।

1.1.8 पुरस्कार -

श्रवणकुमार गोस्वामी जी को निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं -

1) राधाकृष्ण पुरस्कार - 'जंगलतंत्रम' उपन्यास के लिए।

2) प्रेमचंद अनुशंसा पुरस्कार - 'राहुकेतु' उपन्यास के लिए।

3) कथा-लेखन के लिए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद का पुरस्कार।

4) मानस संगम पुरस्कार - रामचरित्मानस (मुंडारी) के संपादन के लिए आदि पुरस्कार उन्हें उनकी साहित्य संसार पर प्राप्त हुए।

1.2 श्रवणकुमार गोस्वामी का कृतित्व का परिचय -

समकालीन उपन्यासकारों में श्रवणकुमार गोस्वामी का योगदान विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है। श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने लेखनी पकड़े पाच दशक गुजर गए हैं। उनकी रचनाधर्मिता पूरी निष्ठा के साथ हमारे सामने उभर आती है। गोस्वामी जी स्वयं बताते हैं कि रचना

---

1. सं. शरेशचंद्र चुलकीमठ - उपन्यासकार श्रवणकुमार गोस्वामी, पृ. 19

के लिए दो बातों की अनिवार्यता है- परिवेश और रचनाकार। गोस्वामी जी को लेखन में अधिक रुचि होने के कारण वे जहाँ भी जाते हैं वहाँ अपने कान, आँख और मस्तिष्क को सचेत रखने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। किसी भी रचनाकार के लिए उसकी रचना का सृजन करते समय उसका युग परिवेश दृष्टिगोचर होता है। वे अपने कृति में कथानक, पात्र, संवाद, भाषा शैली आदि अपने परिवेश से ही लेते हैं। श्रवणकुमार गोस्वामी जी के साहित्य के बारे में कहा जाता है कि ''स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की जटिलताओं एवं अंतर्विरोधों को व्यंग्यात्मक धरातल पर बहुआयामी अभिव्यक्ति देने का जो प्रयास उपन्यासकार श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने जंगलतंत्रम् से शुरू किया था, वह उनकी परवर्ती रचनाओं में और अधिक प्रभावी ढंग से प्रकट किया है।''[1] उन्होने अपने उपन्यासों में जमीनी सच्चाई को उजागर करते हुए व्यवस्था से जुड़े लोगों तथा उनके द्वारा रचे गए षड्यंत्रों का और फैलाए भ्रष्टाचार, स्वार्थांधता में लिप्त लोगों पर कड़ा प्रहार किया है। उन्होने अनेक विधाओं में अपनी कलम चलाई है, उसमें उपन्यास, नाटक, कहानी संग्रह, प्रहसन, एकांकी, जेल संस्मरण, हास्य-व्यंग्य, शोध, आलोचना और संपादित ग्रंथ आदि समाविष्ट हैं। उनका संक्षिप्त परिचय निम्नलिखत प्रस्तुत है -

1.2.1 उपन्यास -

अब तक गोस्वामी जी ने बारह उपन्यास लिखे हैं। वे निम्नलिखित हैं -

1.2.1.1 जंगलतंत्रम् -

'जंगलतंत्रम्' श्रवणकुमार गोस्वामी जी का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास पर उन्हें 'राधाकृष्ण' पुरस्कार मिला है। इस उपन्यास की कथा पच्चीस रातों में फैली है। जंगल के पशुओं को प्रतीक बनाकर गोस्वामी जी ने तथाकथित राजनेता लोगों पर और शासक वर्ग पर करारा व्यंग्य प्रस्तुत किया है। इसमें सिंह राजनेता का, मोर प्रशासन का, नाग पूँजीपति तथा चूहा आम-आदमी का प्रतीक है। इसमें आम-जनता का शोषण यह पूँजीपति लोग सदियों से करते आ रहे हैं। देश की आजादी के पच्चीस वर्षों की राजनीतिक क्षेत्र में मूल्यों में जो गिरावट आयी है उसके जिम्मेदार राजनेता, प्रशासन और पूँजीपति की मिलीभगत से जन-सामान्य लोगों का शोषण करने का षड्यंत्र रचाकर उसमें सफल भी होते हैं, लेकिन लेखक यहाँ यह बताना चाहते हैं कि यदि आम-

---

1. डॉ. सतीश पांडेय - आदिवासी शोषण और व्यवस्था-विरोधी हस्तक्षेप, पृ. 60

आदमी अपनी शक्ति पहचानकर ठीक ढंग से विवेक-बुद्धि के साथ इसका उपयोग करे तो राजनीतिक व्यवस्था और स्वार्थांधता को जड़ से निकाल फेंकने में देर नहीं लगेगी और स्वस्थ और सबल समाज व्यवस्था का निर्माण करने में देर नहीं लगेगी। यही लेखक जंगल के पशुओं को प्रतीक बनाकर बताना चाहते हैं।

1.2.1.2 सेतु -

गोस्वामी जी का दूसरा उपन्यास 'सेतु' फिल्म जगत् के जीवन से संबंधित लघु उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा काल के थपेड़ों से खंडित होकर आम-जनता के स्मृतियों से विस्मृत होनेवाले अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के मानसिक द्वंद्व और संघर्ष की है। इस उपन्यास में लेखक बताते हैं कि कोई भी महापुरुष अपने कर्मों से अमर होते हैं, न कि अपनी संतान या वंश परंपरा से। 'सेतु' की नायिका 'रचना' तथा नायक 'अमर' दोनों मिलकर 'अभिनव कला मंदीर' की स्थापना करके नए युवक-यवुतियों को निःशुल्क अभिनय का प्रशिक्षण देने का कार्य करते हैं। रचना और अमर को एकत्र लाने के लिए 'अभिनव कला मंदीर' यह सेतु बन जाता है। यही इस उपन्यास की मौलिकता है।

1.2.1.3 भारत बनाम इंडिया -

गोस्वामी जी ने इस उपन्यास में भारतीय जीवन की अनेक विषमताओं का चित्रण किया है। जिसमें छुआछूत, ऊँच-नीच, अंधविश्वास, लूट-पाट, शोषण, भ्रष्टाचार, बाढ़ की विभीषिका, राहत कार्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार, अस्पतालों मे डॉक्टरों और कंपाउंडरों के व्यभिचार, मरीजों की दर्दभरी कहानीयों का, शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार और राशन की दुकान पर लगी हुई लंबी कतार, स्वार्थलिप्सा में ग्रसित राजनेता लोग आदि अनेक समस्याओं का चित्रण इस उपन्यास में करके विदेश से आए जैक फिलिप पत्रकार के द्वारा किया है। ''वस्तुतः यह सांप्रतिक भारत की उस पीड़ा के बहुरंगी चित्रों का अलबम है, जिसे आजादी के बाद उसके गाँव और नगर भोग रहे हैं।''[1] यहाँ लेखक ने भारत के सांप्रदायिक जीवन का यथार्थ रूप 'भारत बनाम इंडिया' में चित्रित किया है।

---

1. डॉ. रामप्यारे तिवारी - समकालीन पीड़ा के बहुरंगी चित्रों का अलबम, जनवरी-मार्च, समीक्षा,1984, पृ. 49

1.2.1.4 दर्पण झूठ ना बोले -

'दर्पण झूठ ना बोले' यह एक रूपक कथा है। जिसके माध्यम से लेखक ने समकालीन भारतीय समाज में व्याप्त चतुर्दिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। आर्थिक, राजनीतिक भ्रष्टाचार का सूक्ष्म चित्रण करके उस पर तीखा प्रहार किया है। लेखक ने यहाँ फ्लैश बैक पद्धति से वर्तमान, अतीत और भविष्य का 'दर्पण' माध्यम बनाकर प्रकट किया है, क्योंकि दर्पण झूठ नहीं बोलता। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने तथाकथित लोगों का पर्दाफाश किया है।

1.2.1.5 राहुकेतु -

'राहुकेतु' इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने सार्वजनिक उद्योग क्षेत्र की दुर्दशापूर्ण स्थिति सुधारने के लिए उचित व्यक्ति का पद पर होना अनिवार्य माना है। लेकिन यह तथाकथित राजनेता, पददलित, स्वार्थी लोलुप लोग ऐसा होने नहीं देते। बल्कि उसमें बाधा डालने का कार्य करते हैं। गोस्वामी जी ने व्यंग्यपूर्ण शैली में समकालीन भ्रष्ट राजनीति में ईमानदार और मानवीय मूल्यों के प्रति प्राणों की बाजी लगानेवाले आदमी की दुर्दशा का चित्रण किया है।

1.2.1.6 मेरे मरने के बाद -

'मेरे मरने के बाद' उपन्यास में लेखक ने अधिकतर हिंदी सृजन-कर्ताओं की त्रासदी का कारुणिक चित्रण किया है। हिंदी के रचनाकार सदैव उपेक्षित, पीड़ित, अपमानित और राजनीति के षड्यंत्र में बुरी तरह शिकार बन गया है। यह उपन्यास राष्ट्र के सबसे महत्त्वपूर्ण अंग प्रतिभासंपन्न रचनाकारों के प्रति समाज का दायित्वहीनता, उदासीनता एवं व्यवस्था की उपेक्षा का कारुणिक चित्र है।

1.2.1.7 चक्रव्यूह -

'चक्रव्यूह' उपन्यास में लेखक ने शिक्षा क्षेत्र में पनप रहे भ्रष्टाचार और अनैतिकता का ऐसा बिकट 'चक्रव्यूह' बन गया है जिसे तोड़ पाना ईमानदार, कुशल, निष्ठावान कुलपतियों तथा प्रशासकों के लिए असंभव बात बन गई है। विश्वविद्यालय में फैले भ्रष्टाचार, हिंसा, जातिवाद, राजनीतिक हस्तक्षेप आदि का पर्दाफाश किया है। लेखक स्वयं कहता है कि "जिस

LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

दिन इस विश्वविद्यालय की नींव पड़ी, उसी दिन यहाँ भ्रष्टाचार की भी नींव पड़ी गई थी।''[1] यहाँ पता चलता है कि शिक्षा जैसे पवित्र पेशे में राजनेता लोगों ने हस्तक्षेप करके उसका माहौल गंदगीपूर्ण बनाया है। इसका यथार्थ चित्रण लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

1.2.1.8 एक टुकड़ा सच -

'एक टुकड़ा सच' यह श्रवणकुमार गोस्वामी जी का यथार्थवादी उपन्यास है। मध्य वर्ग के नैतिक पतन का अत्यंत भयावह चित्रण इसमें लेखक ने प्रस्तुत किया है। इसमें नीलम और ठाकुर जगमोहन सिंग इन दो पात्रों के इर्द-गिर्द कथा बुनायी गई है।

1.2.1.9 आदमखोर -

'आदमखोर' गोस्वामी जी का नवा उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक ने तीन पीढ़ियों की गाथा प्रस्तुत की है। सामाजिक विसंगतियों के साथ ही कुछ पात्रों के माध्यम से उनकी निजी कहानियाँ हैं। जिनकी एक आदमखोर के द्वारा अंततः असहाय और लाचार लड़की का सर्वनाश हो जाता है। इसका चित्रण अत्यंत यथार्थ रूप में लेखक ने चित्रित किया है।

1.2.1.10 केंद्र और परिधि -

'केंद्र और परिधि' उपन्यास में लेखक ने 'गाँव' को केंद्र बनाकर 'शहर' को उसकी 'परिधि' याने केंद्रबिंदू मानकर यह कहलाने की कोशिश की है कि 'गाँवों' से 'खेती' का नामोनिशान मिटाकर उसका औद्योगिकीकरण करके उसे शहर बनायेंगे तो खायेंगे क्या ? ऐसा मार्मिक प्रश्न लेखक ने खड़ा किया है। उपन्यास में 'गुरुजी' के माध्यम से 'कृषि' का महत्त्व बताकर उसकी उपज पर ही 'शहर' टिका है। ऐसी मौलिक बात लेखक ने यहाँ बताया है। औद्योगिक संस्कृति की संरचना करनेवाले अर्जुनसिंग, गुरुजी के दो बेटे डॉ. पारस और इंजिनिअर माधव 'कृषि' को महत्त्व न देकर भौतिक सुख-सुविधाओं को महत्त्व देते हैं। वे कहते हैं कि इस माती में क्या है ? धूल ही है। लेकिन इन लोगों को यह पता नहीं कि शहर 'गाँव' पर किस प्रकार आधारित है। इसका मार्मिक चित्रण यहाँ लेखक ने किया है।

---

1. श्रवणकुमार गोस्वामी - चक्रव्यूह, पृ. 86

1.2.1.11 कजरी -

'कजरी' गोस्वामी जी का लघु उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1998 के 'जनसत्ता' के वार्षिक अंक में हुआ है। यह उपन्यास में उँच-नीच और जाति-पाति के विरोध में पनपती हुई व्यवस्था में कजरी को नौकरानी से ज्यादा अहमियत देना नहीं चाहते। रंजन और ज्योति का पुत्र समीर अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर उनका हृदय परिवर्तन करके कजरी को बेटी के रूप में अपनाने के लिए बाध्य करता है। यही इस उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य है।

1.2.1.12 हस्तक्षेप -

श्रवणकुमार गोस्वामी जी का 'हस्तक्षेप' उपन्यास नवीनतम् कृति है। 'हस्तक्षेप' उपन्यास में गोस्वामी जी ने आदिवासी जीवन को एक नए दृष्टिकोण से उभारने का सफल प्रयास किया है। आदिवासियों के जीवन और संस्कृति को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है। लेकिन बदलती परिस्थितियों में उनके जीवन में जो नई विकृतियाँ एवं बदलाव आए हैं, उनकों उपन्यास में लेखक ने पहली बार स्पष्ट रूप में बताने का प्रयास किया है।

'हस्तक्षेप' उपन्यास में लेखक ने आदिवासी जीवन की अभावग्रस्तता, शोषित, पीड़ित एवं उपेक्षित होने के कारण उनके विकास के लिए अनेक योजनाएँ बनाई जाती हैं। लेकिन राजनेता लोगों ने उसे एक 'धंधा' बनाया है। स्वार्थ लोलुप लोगों ने अपनी पूँजी या बाहुबल से राजनीति को बढ़ावा दिया है। उसी प्रकार आदिवासी जीवन का उन्नयन और उनकी संस्कृति की रक्षा करना आर्थिक लाभ उठानेवालों के लिए एक स्रोत बन गया है। 'धर्म' और 'जाति' की तरह आदिवासी होना भी राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में सफलता का एक माध्यम बन गया है। यथार्थ रूप में आदिवासियों के नाम पर आयोग, संगठन, परिषद का गठन कर राजनेता लोगों ने आर्थिक लूट मचायी है। लेकिन विडंबना यह है कि आदिवासियों का शोषण केवल बाहरी लोगों द्वारा ही नहीं हुआ अपितु आदिवासी नेता कहे जानेवाले लोगों के द्वारा भी हुआ है। आदिवासियों के विकास के लिए जो लोग कुछ करना चाहते हैं, उन्हें कठघरे में खड़ा किया जाता है और कुछ लोग विकास के नाम पर अपना व्यवसाय बनाया है। उन लोगों की दुकान फल-फूल रही है। आदिवासियों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए, उनके भीतर आत्मसम्मान जाग्रत करने के लिए संघर्ष हेतु आगे आती है, रंगपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्राध्यापिका और आदिवासी महिला छात्रावास

की अधीक्षिका डॉ. महुआ चक्रवर्ती। किंतु उसे पग-पग पर कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और अंततः उसे नैतिकता, ईमानदारी का जीवन एवं भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष करने की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। इसका ज्वलंत उदाहरण महुआ के माध्यम से लेखक ने दिया है। डॉ. सदानंदगुप्त प्रसाद कहते हैं कि ''शोषण के विरूद्ध सार्थक 'हस्तक्षेप' ''[1] है। महुआ चक्रवर्ती और करमा भगत और उनके पीछे प्रेरणा के रूप में, शक्ति के रूप में खड़ी है- बिरसी भगत। उपन्यास की पूरी कथा दो स्तरों पर चलती है। एक महुआ को केंद्र में रखकर और दूसरी करमा भगत को केंद्रबिंदु बनाकर। इस तरह गोस्वामी जी ने इन दोनों पात्रों के मध्य में कथावस्तु इर्द-गिर्द बुनी है।

1.2.2 नाटक साहित्य -

1.2.2.1 कल दिल्ली की बारी है -

'कल दिल्ली की बारी है' यह गोस्वामी जी का पूर्णकालिक नाटक है। इसमें राजनीतिक चेतना को चित्रित किया है। हमारा प्रजातंत्र गुंडागर्दी में किस तरह बदलता जा रहा है और भ्रष्टाचार ग्रस्त चुनाव किस प्रकार निरर्थक हो गया है, इसका यथार्थ चित्रण गोस्वामी जी ने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

1.2.2.2 समय -

'समय' पूर्णकालिक नाटक है। इसमें गोस्वामी जी ने यह दर्शाया है कि 'समय' बहुत बलवान होता है। उसके सामने शक्तिशालियों को भी झुकना पड़ता है। यह बात आंतरजातीय विवाह से जुड़े एक कथानक के माध्यम से बताया गया है।

1.2.2.3 सोमा -

'सोमा' श्रवणकुमार गोस्वामी जी का एकांकी संकलन है। इसमें 'सोमा' प्रमुख एकांकी है। इसमें नौ एकांकी संकलित हैं। इन सभी एकांकियों को रेडिओं नाटक के रूप में लिखा गया है। समय-समय पर उसका प्रसारण आकाशवाणी पर हो भी चुका है। इसमें विभिन्न प्रकार की समस्याओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

---

1. सदानंदप्रसाद गुप्त - शोषण के विरूद्ध सार्थक 'हस्तक्षेप', समीक्षा, अप्रैल-जून, 2004, पृ. 28

1.2.3 प्रहसन -

1.2.3.1 पति-सुधार केंद्र -

'पति-सुधार केंद्र' यह गोस्वामी जी का प्रहसन है। इसमें नौं प्रहसन संकलित हैं। इन सभी प्रहसनों का प्रसारण आकाशवाणी, विविधभारती के 'हवा महल' कार्यक्रम में बार-बार हो चुका है।

1.2.3.2 हमारी माँगे पूरी करो -

'हमारी माँगे पूरी करो' इस संकलन में बारह प्रहसन संकलित हैं। इस प्रहसनों का प्रसार विविध भारती के लोकप्रिय कार्यक्रम 'हवाल महल' में बार-बार हो चुका है। इनका आकाशवाणी से भी प्रसारण हो चुका है। यह प्रहसन मंचीय दृष्टि से सफल हो चुके हैं।

1.2.4 शोध और आलोचना -

1.2.4.1 नागपुरी और उसके बृहद्-त्रय (शोध) -

इस शोध-पुस्तिका में चार शोध-लेख हैं। इनके शीर्षक हैं- 1) नागपुरी - एक स्वतंत्र बिहारी बोली, 2) घासीराम और नागपुरी फागशतक, 3) धनीराम बक्शी तथा 4) पीटर शांति नवरंगी इन शीर्षक के अंतर्गत गोस्वामी जी 'नागपुरी और उसके बृहद्-त्रय शोध का अध्ययन किया है।

1.2.4.2 नागपुरी शिष्ट साहित्य (शोध) -

यह शोध-पुस्तिका में गोस्वामी जी का शोध-ग्रंथ है। इसमें निम्नलिखित अध्याय हैं -

प्रथम अध्याय के अंतर्गत प्रवेशक, छोटा नागपुर एक ऐतिहासिक परिचय, नागपुरी साहित्य का सामान्य परिचय और अध्ययन पद्धति का समावेश है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत ईसाई मिशनिअरियों के तत्वावधान में रचित नागपुरी साहित्य का समावेश है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत नागपुरी के विकास में आकाशवाणी, राँची का योगदान का अध्ययन किया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत नागपुरी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका का समावेश है। पंचम अध्याय के अंतर्गत नागपुरी शिष्ट साहित्य में प्रतिफलित छोटा नागपुर की संस्कृति। षष्ठम

अध्याय में परिशिष्ट है। उसमें 1) नागपुरी में प्रकाशित पुस्तकों की सूची है। 2) नागपुरी साहित्य-सेवियों का संक्षिप्त परिचय है।

1.2.4.3 नागपुरी भाषा (शोध) -

'नागपुरी भाषा' श्रवणकुमार गोस्वामी जी का शोध-ग्रंथ है। वह निम्नलिखित अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। नागपुरी भाषा के अंतर्गत आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं में नागपुरी का स्थान, आधुनिक नागपुरी का उदय, नागपुरी का प्रकरण, नागपुरी भाषा या बोली ? नागपुरी की लिपि, छोटा नागपुर की जनजातियाँ और नागपुरी, नागपुरी भाषा क्षेत्र, नागपुरी भाषा लोग, सन् 1961 की जनगणना और नागपुरी, नागपुरी भाषा-भाषियों की संख्या, बिहारी बोलियों में नागपुरी का स्थान, नागपुरी के विभिन्न रूप, नागपुरी की विभाषाएँ - 1. पंचपरगनिया, 2. सदरी (कोल) मुंडा, सदरी कोरवा आदि बातों का समावेश नागपुरी भाषा के अंतर्गत किया है।

1.2.4.4 नागपुरी का व्याकरण -

नागपुरी का व्याकरण के अंतर्गत ध्वनिसमूह, संज्ञा - 1) वचन, 2) कारक, 3) विशेषण, 4) सर्वनाम, 5) क्रिया- नागपुरी धातुएँ, अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाएँ, वाच्य, वाक्य, प्रकार, काल, कृदंत, काल-रचना, 6) प्रेरणार्थक क्रियाएँ, 7) संयुक्त क्रियाएँ, 8) अव्यय सहाय्यक ग्रंथों की सूची, अनुक्रमणिका आदि बातों का समावेश है।

1.2.5 आलोचना -

1.2.5.1 राधाकृष्ण -

यह पुस्तक प्रेमचंद के समकालीन तथा हास्य-व्यंग्य के अग्रदूत राधाकृष्णजी पर केंद्रित एक प्रामाणिक पुस्तक है। राधाकृष्ण के ऊपर वह पहली पुस्तक है, जिसमें उनकी सभी कृतियों का परिचय प्रस्तुत किया है। वह निम्नलिखित है - 1) राधाकृष्ण उर्फ लालबाबू, 2) राधाकृष्ण का रचना संसार, 3) मैं कहता आँखिन की देखी, 4) फुटपाथ से 'भूमा' तक, 5) रेखा हास्य की भंगिमा कटाक्ष की, 6) देख तमाशा देख, 7) प्रतिमा के विविध रंग और 8) बात तो अब शुरू होगी आदि बातों का समावेश है।

1.2.6 कहानी-संग्रह -

1.2.6.1 जिस दीये में तेल नहीं -

इस कहानी संग्रह का प्रकाशन तब हुआ था जब लेखक बी. ए. के छात्र थे। यह लेखक की पहली प्रकाशित पुस्तक है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित कहानियाँ सम्मिलित हैं - ताज, शांति, गंगा के तट पर, मुन्ना, दीवार, चाय-पानी, पतंग, मैनी, लखना कंकड और जिसे दीये में तेल नहीं आदि कहानियाँ हैं।

1.2.7 संस्मरण -

1.2.7.1 लौहकपाट के पीछे (जेल संस्मरण) -

हजारीबाग के कारगार में लेखक 7 मई, 1982 से 2 जून, 1982 तक कैद थे। बिहार के सभी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों की हड़ताल के दौरान लेखक ने स्वयं को गिरफ्तारी दी थी। इस पुस्तक को सामग्री संकलन करने के लिए लेखक ने ऐसा किया था। यह किताब जेल की भीतरी व्यवस्था को उजागर करने का प्रामाणिक प्रयास है।

1.2.8 प्रमुख संपादित ग्रंथ -

1.2.8.1 डॉ. बुल्के स्मृति-ग्रंथ -

इसके संपादक श्रवणकुमार गोस्वामी तथा दिनेश्वर प्रसाद हैं। यह पाँचे खंडों में विभाजित है। इसके अंतर्गत जीवन प्रसंग तथा संस्करण, कृतित्व, मातृभमि और विविध इन बातों का समावेश है। इस ग्रंथ में कुल 18 लेख संग्रहित हैं। इस ग्रंथ के प्रकाशन में सभी प्रख्खात लेखकों ने अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया। डॉ. कमिल बुल्के पर एकमात्र ग्रंथ प्रकाशित है।

1.2.8.2 मुंडारी टीका -

इसके संपादक श्रवणकुमार गोस्वामी तथा स्वर्गीय दुलायचंद्र मुंडा हैं। इस ग्रंथ में गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस के पाठ को आधार माना है। मुंडारी टीका गद्य में है। छोटा नागपुर के मुंडाओं के बीच इस ग्रंथ का निःशुल्क वितरण किया गया था।

निष्कर्ष -

नवम् दशक के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में श्रवणकुमार गोस्वामी का नाम लिया जाता है। वह प्रतिभासंपन्न और बहुआयामी व्यक्तित्व के साहित्यकार हैं। समाज में फैली

स्वार्थांधता, अराजकता, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि अनेक समस्याओं को समाज के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। वह एक ईमानदार लेखक होने के साथ-साथ अपने कर्तव्य के प्रतिनिष्ठा से प्राणार्पण करने का साहस भी करते हैं। उन्होने बचपन में अशिक्षा, अभावग्रस्तता, निर्धनता और अशांति आदि अनेक समस्याओं का सामना किया है। अध्ययन जारी रखने के लिए उन्होने अनेक प्रकार के कष्ट सहते हुए अपना अध्ययन पूरा किया है। वह दृढ़निश्चयी, संघर्षशील और सदैव कर्मशील रहे हैं। उन्होने बहुआयामी और प्रतिसंपन्नता के कारण अनेक विधाओं के माध्यम से अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया। वह सहृदयी एवं संवेदनशील लेखक हैं। साथ-ही-साथ लड़ाकू और विद्रोही प्रवृत्ति भी उनके व्यक्तित्व मे दिखाई देती है। उनकी रचना में सहज, सरल, सीधी और प्रवाहमयी भाषा से पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य करती हैं। उन्हें समाज में बार-बार अपमानित होना पड़ा। लेकिन उन्होने कभी हार नहीं मानी। कठिनाईयों के वक्त में चट्टान की भाँति अड़िग खड़े रहे हैं। उन्होने कभी पुरस्कार या किसी ऊँचे पद की अभिलाषा नहीं की। गोस्वामी जी अनुशासनप्रिय, अध्ययन, अध्यापन के प्रति सदैव समर्पित, उच्चकोटि के प्राध्यापक रहे हैं। वह लेखक की हैसियत से सफल रहे हैं। इस प्रकार उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व उच्च कोटि का दिखाई देता है।